वैश्विक शिक्षा : प्रकृति, क्षेत्र एवं शिक्षण अधिगम व पाठ्यक्रम के नये प्रतिमान

रमेश कुमार
विज्ञान शिक्षक,
जू0हा0स्कूल–उसिया पूर्वी भदौरा, गाजीपुर

सारांश

वर्तमान आधुनिक युग में विश्व के समस्त राष्ट्र अपनी वैयक्तिक उन्नति को समृद्ध करने के साथ ही समस्त राष्ट्रों के हितों को पोषित करने व उनके उन्नतिकरण की दिशा में एक समन्वित प्रयास कर रहे हैं। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के नित नये प्रयोगों से समस्त विश्व एक समन्वित समुदाय के रूप में एक दूसरे से जुड़ गया है, जिससे वैश्विक समुदाय का एक वृहत्तर सम्प्रत्यय उभरकर सामने आया है। समूचा वैश्विक समुदाय एक दूसरे की प्राकृतिक सम्पदा, मानव–सम्पदा एवं बौद्धिक सम्पदा का समुचित एवं अधिकतम लाभ उठाकर अपने को विकसित करने की दिशा में कार्य कर रहा है। सेवा, स्वास्थ्य, सुरक्षा, शिक्षा, सूचना आदि क्षेत्रों में समूचा वैश्विक समुदाय एक समन्वित प्रयास के रूप में एक दूसरे को तथा एक दूसरे से लाभान्वित होने की संकल्पना पर कार्य कर रहा है। वैश्वीकरण के दौर में संसार की विभिन्न संस्कृतियों, समाज, बाजार व उनकी नीतियों का एकीकरण ही वैश्विक समुदाय के सम्प्रत्यय का प्रकटीकरण है। वैश्वीकरण के दौर में मानव संसाधन को अत्यन्त प्रतिस्पर्धी विश्व की चुनौतियों को स्वीकार करने हेतु वैश्विक नागरिक के तौर पर विकसित करने की संकल्पना ने वर्तमान शिक्षा व्यवस्था पर विशेष प्रभाव छोड़ा है। वैश्वीकरण के प्रभाव ने स्कूलों, कालेजों व उनकी विषय–वस्तु को अन्तर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप विकसित करने की मांग उत्पन्न की है। शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य छात्रों में अपेक्षित व्यवहार, जिज्ञासा, क्षमता, अभिरुचि उत्पन्न करना है, परन्तु वैश्वीकरण ने वर्तमान शिक्षा व्यवस्था पर जीवन संघर्ष, योग्यतम की उत्तरजीविता हेतु वैश्विक प्रतिस्पर्धा में सफल होने वाले छात्रों के विकास हेतु दबाव बनाया है।

प्रस्तावना

शिक्षा मानव विकास का प्रमुख एवं मूल साधन है, जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात एवं आर्थिक शक्तियों का विकास उसके ज्ञान, कला–कौशल में वृद्धि तथा व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। शिक्षा का पारंपरिक अर्थ है सीखना और सिखाना। शिक्षा शब्द अंग्रेजी के एजुकेशन(लैटिन एजुकेटम) शब्द से बना है, जिसका अर्थ है– बच्चे की आन्तरिक शक्तियों को बाहर की ओर प्रकट करना। दार्शनिकों के अनुसार शिक्षा मनुष्य जीवन के अन्तिम उद्देश्य की प्राप्ति का साधन होती है। समाजशास्त्री शिक्षा को व्यष्टि और समाज के विकास का साधन मानते हैं। राजनीतिक दृष्टिकोण से वास्तविक शिक्षा वह है जो राष्ट्र के श्रेष्ठ नागरिकों का निर्माण करती है। अर्थशास्त्रियों के अनुसार शिक्षा वह आर्थिक निवेश है, जिसके द्वारा व्यक्ति में उत्पादन एवं संगठन के कौशलों का विकास किया जाता है और इस प्रकार व्यक्ति समाज एवं राष्ट्र की उत्पादन क्षमता बढ़ायी जाती है तथा उनका आर्थिक विकास किया जाता है। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण में शिक्षा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का स्वाभाविक, समरस और प्रगतिशील विकास है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण में शिक्षा का अर्थ अन्तःशक्तियों का वाह्य जीवन से समन्वय स्थापित करना है। इन सब दृटिकोणों से शिक्षा की प्रकृति से यह तथ्य स्पष्ट होता है कि शिक्षा एक सोद्देश्य, सामाजिक, अनवरत गतिशील और विकास की प्रक्रिया है।

कालान्तर में आधुनिकीकरण के फलस्वरूप विश्व के समस्त राष्ट्रों ने विज्ञान एवं तकनीकी को सीखने और इन सबके प्रयोग से अपने देश में औद्योगिक विकास करने तथा अपने जीवन–स्तर को ऊँचा उठाने के प्रयत्न शुरु किये। इस प्रकार शिक्षा सेवा की जगह अवसर के रूप में देखी जाने लगी। धीरे–धीरे शिक्षा बाजारीकरण की तरफ बढ़ने लगी। इसके तहत आर्थिक विकास, प्राकृतिक संसाधनों की खोज, मानव संसाधन का निर्माण, जनसंख्या नियंत्रण एवं चरित्र निर्माण जैसे नवीन उपागमों हेतु शिक्षा

आधुनिकीकरण के मूल साधन के रूप में इस्तेमाल की जाने लगी। वैश्वीकरण के दौर में प्रवेश करते ही शिक्षा का स्वरूप और विस्तृत हो गया। पहले शिक्षा जहाँ सामाजिक विकास का प्रमुख साधन हुआ करती थी, वहीं वैश्विक परिदृश्य में शिक्षा का स्वरूप उत्पादक, नवाचारी व प्रतिस्पर्धी हो गया। 20वीं सदी के उत्तरार्द्ध में वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने विश्व व्यापार, दूर संचार, शैक्षिक क्रियाकलापों, आर्थिक मुद्दों में अभूतपूर्व परिवर्तन किया है। शिक्षा के वैश्वीकरण के कारण ज्ञान का पश्चिमी देशों से विकासशील देशों की तरफ स्थानान्तरण हुआ है, जिससे उस राष्ट्र के मानव संसाधनों की दक्षता एवं क्षमता में परिवर्धन हुआ है।

वैश्वीकरण और उदारीकरण के दौर में समूचे विश्व ने शिक्षा के परम्परागत तीरीकों के बजाय शिक्षा के उच्च गुणवत्तापूर्ण व दक्षता प्रदायी उपागमों को अपनाया है। किसी भी राष्ट्र के तकनीकी नवाचारों व आर्थिक वृद्धि हेतु आवश्यक चालक बल के रूप में मानव पूँजी का निर्माण करने में शिक्षा एक महत्वपूर्ण निवेश है। समाज के लोगों के बहुआयामी विकास हेतु उस समाज की शिक्षा व्यवस्था का उच्च स्तरीय गुणवत्तापूर्ण होना अतिआवश्यक है। पश्च औद्योगिक काल में विश्व के अधिकतर राष्ट्रों की सम्पूर्ण राष्ट्रीय आय का अधिकांश हिस्सा न केवल कृषि या उद्योग से प्राप्त होता था, बल्कि सेवा क्षेत्र का भी उसमें महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। चूँकि सेवा क्षेत्र दक्ष एवं प्रशिक्षित कर्मियों पर निर्भर है, अतः वैश्विक परिदृश्य में शिक्षा का एक महत्वपूर्ण स्थान है।

वैश्विक शिक्षा की प्रकृति

वैश्वीकरण के दौर में सूचना एवं ज्ञान के प्रसार ने शैक्षिक जगत में एक नई क्रान्ति ला दी है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी की तकनीकी की वजह से पारम्परिक शिक्षा अब वैश्विक शिक्षा का स्वरूप ले चुकी है, जिसके परिणामस्वरूप विश्व के समस्त राष्ट्रों के मध्य अन्तर्सम्बन्ध एवं परस्पर निर्भरता बढ़ी है। मास मीडिया ने समस्त राष्ट्रों के मध्य एक दूसरे की व्यवस्थाओं व उपलब्धियों को जानने की जिज्ञासा को बढ़ा दिया है। वैश्विक शिक्षा समस्त राष्ट्र के अधिगमकर्ताओं में वैश्विक समझ उत्पन्न करने का काम करती है, जिसके फलस्वरूप अधिगमकर्ता प्रत्येक राष्ट्र की शिक्षा की प्रकृति, उद्देश्य, स्वरूप तथा निहितार्थों का बारीकी से अध्ययन कर आत्मसात कर सकें व विभिन्न आयामों के मजबूत व लाभकारी हितों को अपनी शिक्षोन्नति हेतु प्रयोग कर सकें। विभिन्न वैश्विक समस्याओं को उत्पन्न करने वाले कारकों की पहचान कर सकें व उनके समाधान हेतु एक समन्वित प्रयास कर समस्त राष्ट्रों में एक समन्वित सोच व एजेंडा विकसित कर सकें। इस प्रकार वैश्विक शिक्षा समस्त राष्ट्रों के शिक्षा व्यवस्थाओं को समझने व उनसे विभिन्न आंकड़ों के सुव्यवस्थित संकलन की एक वैश्विक व्यवस्था है। वैश्विक शिक्षा के द्वारा विभिन्न आयामों से सन्दर्भित आंकड़ों के संकलन व विश्लेषण के फलस्वरूप विद्यालय–समुदाय के अन्तर्सम्बन्धों को समझने में मदद मिलती है। वैश्विक शिक्षा की प्रकृति बहुआयामी होती है, जिसके तहत विभिन्न राष्ट्रों के विभिन्न विषयों का अध्ययन सम्मिलित होता है। यह प्रतिभागी राष्ट्र की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, भाषायी व राजनीतिक मुद्दों का अध्ययन कराती है। विभिन्न राष्ट्रों की शिक्षा व्यवस्था की समानताओं व विषमताओं का परिचय कराती हैं। इसके अन्तर्गत राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शैक्षणिक समस्याओं, मुद्दों व विद्यालय–समुदाय सम्बन्धों पर गहन शोध अध्ययन किये जाते हैं। इसके साथ ही शिक्षक–शिक्षा व शिक्षण–नीतियों से सम्बन्धित अहम कार्य सम्पन्न किये जाते हैं।

वैश्विक शिक्षा के क्षेत्र

वैश्विक शिक्षा के अन्तर्गत प्रमुख रूप से विभिन्न राष्ट्रों की शिक्षण प्रणाली का विस्तृत अध्ययन कर वैश्विक स्तर पर शैक्षिक सुधारों हेतु नीति व नियम निर्धारित करने में मदद मिलती है। वैश्विक शिक्षा को हम तुलनात्मक शिक्षा के माध्यम से भी अच्छी तरह समझ सकते हैं जिसमें किसी भी राष्ट्र की शैक्षणिक प्रणाली व गतिविधि से जुड़े विभिन्न क्षेत्रों जैसे शिक्षा के विभिन्न प्रक्षेत्रों का विकास, शिक्षक प्रशिक्षण विकास तन्त्र से सम्बन्धित मुद्दों का गहन अध्ययन कर आंकड़े एकत्रित किए जाते हैं व उनका सावधानीपूर्वक विश्लेषण कर विभिन्न राष्ट्रों की शिक्षा व्यवस्था की समानताओं व विभिन्नताओं का वर्णन किया जाता है। दूसरी ओर विभिन्न अन्तर्विषयक मुद्दों जैसे सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक विषयों का भी गहन अध्ययन किया जाता है, जो शिक्षा–समुदाय अन्तर्सम्बन्धों पर अपना स्पष्ट प्रभाव छोड़ते हैं।

अतः बदलते वैश्विक परिदृश्य व बढ़ते वैश्विक समुदाय के समन्वित शैक्षिक उन्नयन हेतु विभिन्न राष्ट्रों के शैक्षिक तन्त्रों का तुलनात्मक अध्ययन करते समय कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुओं को ध्यान में रखा जाना आवश्यक है जैसे–

1. विभिन्न राष्ट्रों की शिक्षा व्यवस्था का विश्लेषण करते समय समसामयिक मुद्दों व समस्याओं तथा उनके सम्भावित हल का चिह्नांकन अवश्य किया जाय जिससे हितधारक देश की शिक्षा व्यवस्था बेहतर हो सके।
2. सम्बन्धित राष्ट्र की दार्शनिक पृष्ठभूमि का अध्ययन किया जाना आवश्यक होता है, क्योंकि किसी भी देश की शिक्षा प्रणाली पर उस राष्ट्र की दार्शनिक पृष्ठभूमि का स्पष्ट प्रभाव होता है।
3. अध्ययनरत राष्ट्र की राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का अध्ययन किया जाना।
4. शिक्षा के प्रशासनिक संगठन का अध्ययन, उसकी केन्द्रीयकृत, विकेन्द्रीकृत तथा स्थानीय स्वायत्तता जैसे मुद्दों की परख करना जो किसी भी राष्ट्र की शिक्षा व्यवस्था पर व्यापक प्रभाव डालते हैं।
5. समाजशास्त्रीय आधार का अध्ययन सामाजिक संगठन, सामाजिक परिवर्तन एवं सामाजिक नियन्त्रण के संदर्भ में किया जाय।

इस प्रकार हम देखते हैं कि सीमा–पार तुलनात्मक अध्ययन के कारण वैश्विक शिक्षा का क्षेत्र बहुत ही व्यापक एवं नवीन सम्प्रत्यय है।

शिक्षण, अधिगम एवं पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में नवीन प्रतिमान

वैश्विक शिक्षा अत्यन्त समसामयिक एवं नवीन सम्प्रत्यय है। निश्चय ही शिक्षा में शिक्षण–अधिगम व पाठ्यक्रमों के परम्परागत स्वरूप की बजाय नयापन का समावेश हुआ है। प्रत्येक राष्ट्र की अपनी सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक व राजनीतिक एका होती है, जिसके अनुसार उस राष्ट्र की शिक्षण अधिगम की नीति, उसके विषय व पाठ्यक्रम निर्धारित होते हैं, जो निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायक होते हैं।

शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य के सर्वांगीण विकास करने, उसकी जन्मजात शक्तियों का विकास करने, उसके ज्ञान, कला–कौशल एवं व्यवहार में परिवर्तन कर उसे सभ्य सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाना रहा है। शिक्षण की व्यवस्था प्री–प्राइमरी, प्राइमरी, उच्च प्राइमरी, सेकेण्डरी, उच्च सेकेण्डरी, स्नातक, परास्नातक व शोध के क्रम में आगे बढ़ती है। पूर्ववत में शिक्षण का स्वरूप शिक्षक–केन्द्रित से वर्तमान में छात्र–केन्द्रित की तरफ स्थानान्तरित हुआ है। शिक्षण के मनोवैज्ञानिक उपागमों पर विशेष ध्यान दिया गया है। शिक्षकों के सेवापूर्व एवं सेवारत प्रशिक्षण द्वारा कौशल एवं समता का विकास किया जाता है। शिक्षकों की प्राचीन भूमिका जहाँ शिक्षक ज्ञान का केन्द्र माना जाता था व छात्र याचक के रूप में होता था, आज यह प्रतिमान नये स्वरूप में रूपान्तरित हुआ है, जहाँ शिक्षा छात्रों की क्षमता, आवश्यकता, मानसिक योग्यता व अभिरुचि देखकर प्रदान की जाती हे, यहाँ शिक्षक एक परामर्शदाता की भूमिका अदा करता है।

वर्तमान शिक्षण प्रणाली में छात्र तकनीकी आधारित शिक्षा की तरफ अधिक आकर्षित हुए हैं। नयी पीढ़ी के विद्यार्थियों में जागरूकता का स्तर बढ़ा है। उनके पास नये–नये विचारों, जिज्ञासाओं का भण्डार है, जो उन्हें और अधिक प्रयोगधर्मी बनाने में मदद करता है। पुरानी शिक्षण विधियों में लेक्चर, सेमिनार, वाद–विवाद, फिल्म, थियेटर, कार्यशालाएँ व प्रशिक्षण कार्यक्रमों की जगह नयी पीढ़ी के अधिगमकर्ता नयी शिक्षण गतिविधियों जैसे, वेव प्लेटफार्म, स्काईप इण्टरैक्शन, वीडियो कान्फ्रेंसिंग, आनलाइन पाठ्यक्रमों की ओर अग्रसर हुए हैं। सोशल मीडिया ने भी इसमें अपनी अहम भूमिका अदा की है। इससे सूचनाओं व ज्ञान का त्वरित आदान–प्रदान सम्भव हुआ है। नये दौर में प्रतिमानों का मात्रात्मकता से गुणात्मकता की ओर, सामूहिकता से वैयक्तिकता की ओर, पारम्परिक ज्ञान से नवाचारी चिन्तन की ओर,अधिगमकर्ता केन्द्रित प्रतिमानों की तरफ स्थानान्तरण हुआ है। पहले शिक्षक एक तरफा ज्ञान प्रदाता होता था, पर अब शिक्षक अधिगमकर्ता भी है, जो छात्रों से भी सीखता है। पुरानी मान्यताएँ इस बात पर फोकस करती थीं कि उपलब्धि स्तर, आज्ञाकारिता व सही उत्तर कैसे प्राप्त हों, परन्तु नयी

मान्यताओं के अनुसार, जीवन–पर्यन्त अधिगम हेतु कैसे अभिप्रेरित करें? स्वानुशासन को कैसे मजबूत करें? जिज्ञासाओं को कैसे जगायें? सृजनात्मकता को कैसे प्रोत्साहित करें? आदि बिन्दुओं पर विचार किया जाता है। सबसे बड़ा प्रतिमान स्थानान्तरण हुआ है, अनुदेशन की विधियों की बजाय अधिगम की प्रकृति में, जहाँ अधिगम केवल विद्यालय, शिक्षक, साक्षरता, गणित, ग्रेड या उपलब्धि तक सीमित नहीं रहा है, बल्कि अधिगम वह प्रक्रिया है जिसमें हमारे पहली बार सांस लेने से शुरु होने वाले प्रत्येक चरण से लेकर मस्तिष्क के रूपान्तरण तक की क्रियाएं सम्मिलित हैं। जैसे–जैसे नयी सूचनाएं जुड़ती जाती हैं, नई–नई दक्षताओं में महारत हासिल होती जाती हैं, इस प्रकार अधिगम के विभिन्न स्वरूपों का प्रकाश मन मस्तिष्क में प्रज्ज्वलित होता है। कालेजों व संस्थाओं में प्रतिमान स्थानान्तरण के फलस्वरूप जो संस्थान शिक्षण के केन्द्र थे, वो अधिगम के केन्द्रों में रूपान्तरित हुए हैं। अधिगम प्रतिमान संस्थान अधिगम उत्पादन पर विचार करते हैं न कि शिक्षण उत्पादप पर। प्रतिमान स्थानान्तरण तब होते हैं, जब पूर्व स्थित प्रतिमान समस्या समाधान की क्षमता व भविष्य के दृष्टि क्षमता को खो देते हैं। नये प्रतिमानों का सफल क्रियान्वयन तभी हो सकता है जब उसके पुराने प्रतिमानों द्वारा निर्धारित स्वरूपों में ही बुद्धिमत्तापूर्वक अपेक्षित सुधार किया जा सके।

उपसंहार

शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य राष्ट्र के स्वस्थ निर्माण हेतु व्यक्तित्व व चरित्र का सम्पूर्ण विकास करना है, जो सत्य व न्याय का पोषक हो, जिम्मेदार व जबाबदेह हो, एक–दूसरे का सम्मान करे, शान्तिप्रिय व समुन्नत समाज के विकास हेतु प्रयासरत हो।

वैश्विक शिक्षा विभिन्न राष्ट्रों की भौगोलिक सीमाओं से परे समस्त विश्व में एक नवीन सम्प्रत्यय है, जहाँ विभिन्न राष्ट्रों की शिक्षा प्रणालियों का विस्तृत एवं स्थानीय दोनों स्तरों पर विश्लेषण कर नये प्रतिमानों के प्रयोग द्वारा शैक्षिक उन्नयन का एक अभिनव प्रयोग किया जा रहा है। प्राचीन शिक्षा व्यवस्था की परम्परागत शिक्षण–अधिगम विधियों व पाठ्यक्रम में नित नये प्रयोग कर नये प्रतिमानों का समावेश किया जा रहा है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में छात्र–केन्द्रित शिक्षा, गतिविधि आधारित शिक्षा, तकनीकी आधारित शिक्षा, बच्चों की मनोवैज्ञानिक दशा का अध्ययन कर उनकी अभिक्षमता व अभिरुचि के अनुसार शिक्षा, उनमें अभिप्रेरणा, सृजनात्मकता व चिन्तन–शक्ति में वृद्धि करने वाली शिक्षा, करके सीखने की कला, खुद के अनुभवों द्वारा सीखने की शिक्षा, उनमें जिज्ञासा, वैज्ञानिक दृष्टिकोण व खोज प्रवृत्ति विकसित करने की शिक्षा, खेल द्वारा शिक्षा जैसे नये प्रतिमानों के सम्मिलित होने से वर्तमान शिक्षा बेहतर, बोधगम्य व रुचिकर हुई है। वैश्विक शिक्षा के अन्तर्गत विभिन्न राष्ट्रों के नवाचारों व नये प्रतिमानों का अध्ययन व समावेशन कर वैश्विक शिक्षा के निर्धारित उद्देश्यों व मानकों को पूरा किया जा सकता है। उदीयमान नवीन तकनीकी ज्ञान ने शिक्षा के वर्तमान प्रतिमानों के तीव्र प्रसार व नवीनीकरण हेतु नवीन अवसरों को उत्पन्न किया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. www.cadmusjournal.org/article/vol-2/issu-2-part-2/towards-new-para digm-education retrived on 03.08.2017.
2. http://www.kerenfogle.com/paradigm-shift-in.eduation retrived on 10.08.2017 http:// www.usna.edu>BarrandTagg retrived on 09.08.2017.
3. http://scholar.google.co.in/scholar retrived 09.08.2017
4. http://link.springer.com/article retrived on 09.08.2017
5 http:// www.usna.edu>BarrandTagg retrived on 09.08.2017.
6. सारस्वत, मालती (2005) : शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा,लखनऊ,आलोक प्रकाशन।
7. सिंह, अरुण कुमार (2013), उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान, नई दिल्ली, मोतीलाल, बनारसीदास।